स्पन्दन

अंक 7 सितम्बर 2021

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 7, सितम्बर 2021

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष
प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

सदस्य
श्री शाजू वर्गीज़, कुलसचिव
डॉ. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक
डॉ क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव सिंह, सहायक प्राध्यापक
श्री सन्मार्ग मित्रा, सहायक प्राध्यापक
डॉ. मुकेश पाठक, उप–पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमती दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक

सम्पादक मण्डल
डॉ. मुकेश पाठक, उप पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक

पत्रिका के मुख एवं अंतिम पृष्ठ का अभिकल्पन
श्री आदित्य वर्मा, छात्र, एम. डेस.

निदेशक की कलम से...

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2008 में स्थापित 'राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है' तथा उच्च शिक्षा के स्नातक, स्नातकोत्तर तथा डॉक्टोरेट डिग्री कार्यक्रम प्रदान करता है।

संस्थान कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु सदैव अग्रसर रहा है। हिंदी के प्रयोग को व्यवहारिक व प्रायोगिक बनाने हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में समय–समय पर राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रशिक्षण/कार्यक्रम संस्थान में कराये जाते हैं। संस्थान विगत वर्षों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स.) के सदस्यों में शामिल है तथा दिये गए निर्देशों/सुझावों का अनुपालन कर रहा है।

वर्ष 2020 में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3), हिंदी का व्यवहारिक प्रयोग, नोट एवं पत्र लेखन का सरल माध्यम जैसे विषयों पर ऑन लाइन प्रशिक्षण दिए गए।

वर्ष 2021 में साइबर क्राइम से सुरक्षा के विषय पर ऑन लाइन प्रशिक्षण आयोजित किये गए। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति व अन्य संस्थानों के प्रशिक्षणों पर सीखने सिखाने के उद्देश्य से संस्थान के कर्मचारी भाग लेते हैं।

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन/व्यापक प्रचार–प्रसार/कार्यालयीन कार्यों में हिंदी की अभिरूचि बढ़ाने के लिये पृथक–पृथक प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

वर्ष 2014 से संस्थान वार्षिक हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' का प्रकाशन कर रहा है। मैं उम्मीद करता हूं संस्थान हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। पत्रिका के सातवें अंक के प्रकाशन पर मैं सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन

संपादकीय

14 सितम्बर 1949 के दिन हिन्दी को देवनागरी लिपि में राजभाषा का दर्जा संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अंतर्गत प्रदान किया गया। हिन्दी भारत में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा होने के कारण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी को जनमानस की भाषा कहा था। हिन्दी को राजभाषा स्वीकार करना राष्ट्र के लिए गौरव की बात है जहां विभिन्न भाषा बोलने व लिखने वाले किसी एक भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार करें और उसके विकास में अपना योगदान करें।

स्पन्दन 2021, जिसमें योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल की विभिन्न गतिविधियों के साथ छात्र, शिक्षक, कर्मचारीगण एवं उनके परिवार के सदस्यों के विभिन्न लेखों, कविताओं के साथ अन्य क्रियाकलापों द्वारा हिन्दी की विकास यात्रा में योगदान देने के प्रयास के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

व्यक्तिगत, सामाजिक, संगठनात्मक क्रियाकलापों एवं उनसे उपजे विचारों से उत्प्रेरित लेखकों के विचार हिन्दी में प्रस्तुत एवं लोगो के उद्‌गारो को संगृहीत कर एक पत्रिका के रूप में प्रस्तुति करने मात्र से हिन्दी की सेवा नहीं हो सकती, इसका उत्थान हमें इसे कार्यक्षेत्र के विभिन्न आयामों में समायोजित करने से ही होगा।

अतः पाठकों से निवेदन है की जहां तक हो सके हिन्दी को सीखने, सिखाने के साथ–साथ व्यवहार में लायें जिससे नई पीढ़ी भी उसके महत्व को समझे, नई तकनीकों एवं शब्दावालियों को हिन्दी में समायोजित करते हुए विषय ज्ञान को हिन्दी में उन्नत करें।

इस वैश्विक महामारी ने हमें सिखाया है कि न सिर्फ भौतिक अपितु डिजिटल रूप से भी शिक्षा का प्रसार करना है। इस प्रकार हम देश के सबसे दूर दराज के छात्रों तक पहुंच सकते है। यदि यह राजभाषा मे होगा जो की सभी के लिए सहज है तो इसकी पहुँच दूर तक होगी और कई लोग इससे लाभान्वित होंगे। अतः ये हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य है की राजभाषा को यथोचित मान देकर इसकी विकास यात्रा में योगदान दें।

संपादक मंडल

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं
फिर भी विचार प्रकट करने करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा
– वाल्तेयर

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नये शैक्षणिक भवन का भूमि पूजन

दिनांक 18 जनवरी 2021 को संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन के द्वारा नये शैक्षणिक भवन का भूमि पूजन माननीय केंद्रीय कैबिनेट मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की उपस्थिति में किया गया। शैक्षणिक भवन का निर्माण 12,500 वर्ग मीटर के क्षेत्रफल में किया जाएगा जिसमें नई कक्षाएं, प्रयोगशालाएं, डिजाइन स्टूडियो, संकाय कक्ष, ऑडिटोरियम और एक ओपन एयर थिएटर शामिल है। माननीय मंत्री महोदय ऑन लाइन माध्यम से उपस्थित थे उनके द्वारा शिला पट्टिका का अनावरण कर आधारशिला रखी गई। योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के निदेशक डॉ. एन. श्रीधरन ने संस्थान की उपलब्धियों और योगदान के बारे में विस्तार से बताया।

माननीय शिक्षामंत्री ने अपने संबोधन में भारतीय वास्तुकला और डिजाइन के क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान द्वारा पूर्व के वर्षों में संस्थान द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की। साथ ही भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दायरे में मौजूदा शिक्षण और प्रशिक्षण प्रक्रिया को समायोजित करने में एस.पी.ए. भोपाल के योगदान की प्रशंसा की। माननीय शिक्षा मंत्री ने संस्थान से स्मार्ट सिटी और ग्राम विकास जैसी परियोजनाओं को आत्मनिर्भर भारत के सपने से जोड़ते हुए संस्थान को इसे मिशन के रूप में लेने का आग्रह किया। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए, संस्थान के पूर्व छात्रों से बात करने की इच्छा व्यक्त की ओर कहा की जिससे यह जाना जा सके की कैसे भारत सरकार उभरते वास्तुविदों एवं योजना विदों को अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है? और कैसे ये उभरते हुए वास्तुकार राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भारत सरकार की मदद कर सकते हैं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

एस.पी.ए. भोपाल में दिनांक 27 अक्टूबर से 02 नवंबर, 2020 के मध्य सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। उक्त आयोजन में ऑनलाइन माध्यम से 27 अक्टूबर, 2020 को संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने सतर्कता प्रतिज्ञा ली। वर्ष 2020 के सतर्कता सप्ताह के विषय पर प्रकाश डालने वाले बैनर, 'सतर्क भारत समृद्ध भारत' को संस्थान के प्रवेश द्वार, शैक्षणिक और प्रशासनिक ब्लॉक पर रखा गया था। सतर्कता विषय पर अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी भाषा में बनाए गए पोस्टरों को शैक्षणिक, प्रशासनिक ब्लॉक तथा छात्रावास के विशिष्ट स्थानों पर प्रदर्शित किया गया था।

स्थापना दिवस

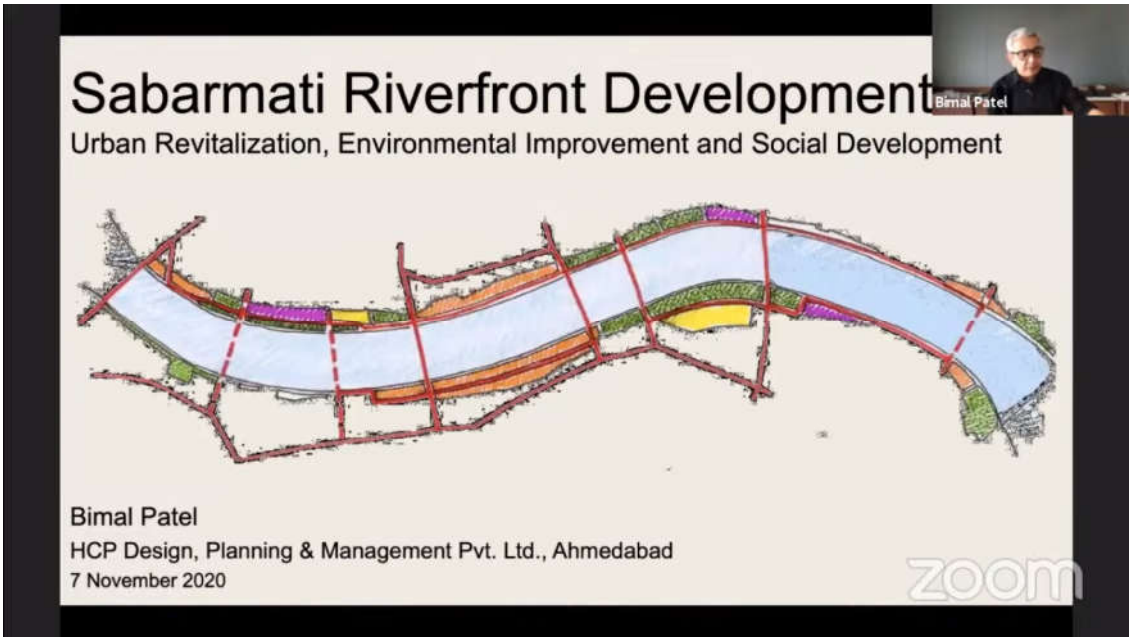

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल ने दिनांक 7 नवम्बर 2020 को अपना 12 वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर एस.पी.ए. भोपाल के शासी मण्डल के अध्यक्ष डॉ. बिमल पटेल ऑन लाइन माध्यम से उपस्थित हुए। उक्त सत्र में डॉ. पटेल ने ''भारतीय शहरों का आधुनिकीकरणः अहमदाबाद स्थित साबरमती रिवर फ्रंट के विकास'' शीर्षक पर एक विशेष व्याख्यान दिया। व्याख्यान के बाद संस्थान के शिक्षकों और छात्रों के साथ चर्चा सत्र का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

11 नवम्बर 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री, मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती पर संस्थान में मनाया गया। इस अवसर पर, प्रख्यात शिक्षाविद् एवं केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने ऑनलाइन माध्यम से चर्चा सत्र आयोजित किया तथा विभिन्न गतिविधियाँ जैसे प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, विशेष व्याख्यान आदि भी आयोजित किए गए। 11 नवंबर, 2020 को शहरी एवं क्षेत्रीय योजना विभाग एवं परिवहन योजना विभाग के संकाय सदस्यों के मध्य 'राष्ट्रीय शिक्षा

नीति (एन.ई.पी.) 2020 के संदर्भ में ''योजना शिक्षा का भविष्य'' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। सभी संकाय सदस्यों ने चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लिया और शिक्षा योजना में सुधार के लिए अपने विचारों को रखा। चर्चा मुख्य रूप से स्नातक और स्नातकोत्तर योजना पाठ्यक्रम से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित थी जिसमें बहु–विषयक दृष्टिकोण, समावेशी योजना शिक्षा, संकाय विकास कार्यक्रम, प्रशिक्षण और आउटरीच कार्यक्रम, प्रतिष्ठित संस्थानों के सहयोग, ऑनलाइन पाठ्यक्रम आदि पर जोर दिया गया था।

भारतीय संविधान दिवस

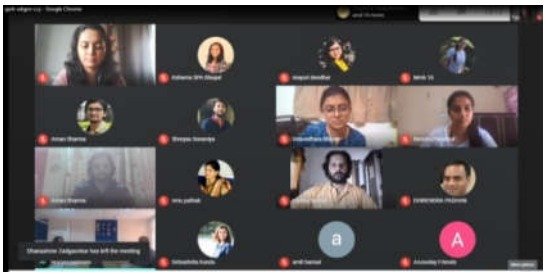

भारत के संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को भारत में संविधान दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर, संस्थान के संरक्षण विभाग ने हमारे संविधान निर्माताओं के प्रति आभार व्यक्त करने और उनके सपनों के भारत का निर्माण के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दोहराने के लिए संविधान दिवस मनाया। कार्यक्रम का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया, जिसमें एस.पी.ए. भोपाल के छात्र–छात्राओं, प्राध्यापकों एवं अन्य लोगों ने भाग लिया।

शहरी एवं क्षेत्रीय योजना विभाग तथा परिवहन योजना विभाग ने एक ऑनलाइन सदस्यता से 'विचार निर्माण' अभ्यास का आयोजन किया। छात्रों और शिक्षकों को 'शिक्षा में भारतीय संविधान के मौलिक सिद्धांतों और मूल्यों को आत्मसात करना' के विषय पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस अभ्यास ने प्रत्येक भारतीय नागरिक द्वारा अपनाए जाने वाले संवैधानिक मूल्यों और सिद्धांतों पर विचार करने का अवसर प्रदान किया।

दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल वास्तुकला और योजना के क्षेत्र में मध्य भारत का प्रमुख एवं राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है।

संस्थान का सातवां दीक्षांत समारोह 5 दिसंबर 2020 को आयोजित किया गया। यह आयोजन कोविड–19 महामारी के कारण ऑनलाइन आयोजित किया गया था। दीक्षांत समारोह का आरंभ संस्थान गान से हुआ। एस.पी.ए. शासी मण्डल के अध्यक्ष प्रो. बिमल पटेल ने कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। संस्थान के निदेशक प्रो.

डॉ. एन. श्रीधरन ने स्वागत ज्ञापन व प्रतिवेदन दिया। निदेशक महोदय ने पूर्व शैक्षणिक वर्षों में

संस्थान के संकाय एवं छात्रों द्वारा हासिल की गई उल्लेखनीय उपलिब्धयों पर प्रकाश डाला एवं आगामी वर्षों में आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात वास्तुविद श्री सतप्रेम मैनी थे। कार्यक्रम में प्रो. बिमल पटेल, अध्यक्ष, शासी मण्डल एवं सीनेट के सदस्य तथा छात्र–छात्राएं ऑन लाइन माध्यम से शामिल हुए। इस अवसर पर कुल 231 स्नातकों को डिग्री प्रदान की गई। इनमें तीन को डॉक्टर की उपाधि प्रदान की गई। डिजाइन विभाग और परिवहन योजना विभाग के पहले बैच ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उत्कृष्टता के दो पदक, नौ प्रवीणता स्वर्ण पदक और एक स्मारक पदक छात्रों को प्रदान किये गये।

हिन्दी कार्यशाला (नोट एवं पत्र लेखन, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3), राजभाषा नियम 5 की जानकारी)

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में दिनांक 10 दिसम्बर 2020 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से सभी संकाय सदस्य एवं कर्मचारीगणों के लिए किया गया। कार्यशाला की प्रस्तुति श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक द्वारा दी गई। कार्यशाला में राजभाषा के प्रयोग को संस्थान स्तर पर बढ़ाने एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न विषयों जैसेः सभी विभागों द्वारा हिन्दी की त्रैमासिक रिपोर्ट भरते समय की जा रही त्रुटियां एवं समाधान, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) की जानकारी 3. राजभाषा नियम 5 की जानकारी, हिन्दी माध्यम से टिप्पण एवं पत्र लेखन का मसौदा, पत्र व्यवहार हेतु क, ख, ग क्षेत्रों की जानकारी से सभी को अवगत कराया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नवीन परिसर में 70 वां गणतंत्र दिवस समारोह 26 जनवरी 2021 को मनाया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। प्रो. श्रीधरन ने अपने उद्‌बोधन में वर्ष 2020 के दौरान हुई संस्थान की उपलब्धियों के बारे में बताया। कोविड 19 महामारी के चलते कार्यक्रम को सामाजिक दूरी बनाये रखने तथा जिला मजिस्ट्रेट द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हेतु संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारीगण व कर्मचारीगण कार्यक्रम में उपस्थित थे।

हिंदी कार्यशाला : ''साइबर अपराध से सुरक्षा'' विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

28 जनवरी 2021 को योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में ''साइबर क्राइम से सुरक्षा'' विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन संस्थान के सभी संकाय और कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन माध्यम से किया गया था। श्री अखिलेश कुमार, उप निदेशक, सी.एस. एफ.एल., चंडीगढ़ को ऑनलाइन मंच पर व्याख्यान के लिए सादर आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का उद्देश्य आधुनिक युग में बढ़ रहे साइबर अपराधों से बचना, ई–सिस्टम का सही ढंग से उपयोग करना, अनावश्यक लुभावने संदेशों से बचना, सॉफ्टवेयर और ऐप्स का उपयोग, सरकारी कार्यालयों में मेल और संदेशों का उपयोग, हिंदी और अंग्रेजी के माध्यम से उपयोग करना, ई–माध्यम तथा अन्य महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी श्री अखिलेश कुमार जी ने उक्त कार्यशाला में दी।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान परिसर में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। दिनांक 21 जून 2021 को योग शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विवेकानंद योग केंद्र, भोपाल के विशेषज्ञों द्वारा योग अभ्यास कराया गया, कोविड महामारी के चलते आयोजन में सामाजिक दूरी व कोविड प्रोटोकॉल को ध्यान में रखा गया इस कारण बड़ी संख्या में संकाय सदस्य एवं स्टॉफ ने अपने घर पर ही योग गतिविधियाँ की तथा वीडियो तैयार कर भागीदार बने।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

संस्थान ने 15 अगस्त 2021 को भारत का 75 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने ध्वजारोहण किया उन्होंने अपने उद्‌बोधन में संस्थान में किये जा रहे भूपरिदृश्य (लेंडस्केपिंग) तथा निर्माणाधीन अकादमिक ब्लॉक की प्रगति के बारे में बताया। एस.पी.ए. परिसर के बच्चों ने उक्त दिवस पर गीत एवं कविताएं प्रस्तुत की। कोविड 19 महामारी के चलते कार्यक्रम में सामाजिक दूरी बनाये रखने तथा जिला मजिस्ट्रेट द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हेतु संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारीगण व कर्मचारीगण उपस्थित थे।

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान परिसर में 15 दिवसीय हिन्दी पखवाड़ा 14 से 28 सितम्बर 2020 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ ऑन लाइन माध्यम से जैसे ''निबंध लेखन, सुलेख लेखन, हिन्दी टंकण, कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता'' आयोजित की गई। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। समापन समारोह के अवसर पर संस्थान की हिन्दी पत्रिका ''स्पन्दन'' (ई–पत्रिका) के 6 वे अंक का विमोचन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

प्रतियोगिता	कर्मचारी का नाम	प्रतियोगिता में स्थान
निबंध	श्रीमती श्वेता सक्सेना, सहायक प्राध्यापक	प्रथम
	श्रीमती स्वाति बिलैया, कनिष्ठ सहायक	द्वितीय
	श्री मयंक दुबे, सहायक प्राध्यापक	तृतीय
सुलेख लेखन	श्रीमती श्वेता सक्सेना, सहायक प्राध्यापक	प्रथम
	श्रीमती नयना आर. सिंह, सहायक प्राध्यापक	द्वितीय
	श्री अभिनव श्रीवास्तव, कनिष्ठ अधीक्षक	तृतीय
हिन्दी टंकण	श्री घन्श्याम राय, कनिष्ठ सहायक	प्रथम
	श्री प्रदीप हेडाऊ, बहुप्रवीणता सहायक	द्वितीय
	श्रीमती दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव	तृतीय
कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण	श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी	प्रथम
	श्रीमती आलिया अली, निजी सचिव	द्वितीय
	श्रीमती स्वाति बिलैया, कनिष्ठ सहायक	तृतीय
स्वरचित कविता पाठ	सुश्री सरोज वर्मा, कार्यालय सहायक	प्रथम
	सुश्री अनुपमा भारती, सहायक प्राध्यापक	द्वितीय
	श्री कुश श्रीवास्तव, लेखापाल	तृतीय

प्रतियोगिताएँ

निबंध लेखन

विषय: शिक्षा व्यवस्था पर कोविड–19 का असर

प्रथम पुरस्कार

चीन के वुहान शहर में कोरोना वायरस (कोविड–19) का संक्रमण जिसका आकार बहुत ही सूक्ष्म, मानव के बाल की तुलना में लगभग 100 गुना छोटा अत्याधिक प्रभावी वायरस पाया गया। इस वायरस का प्रभाव न केवल स्वास्थ्य और विश्व की अर्थव्यवस्था पर पड़ा अपितु शिक्षा व्यवस्था को भी इसने झकझोर के रख दिया। चाहे वो स्कूली शिक्षा हो, या कॉलेज शिक्षा, सभी पर इसका असर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।

स्कूली शिक्षा की बात करें तो न केवल शिक्षकगण और शिष्य, अपितु माता–पिता भी इस वायरस के कारण हुई अव्यवस्था से चिंतित हैं। घर बैठे ऑनलाइन टीचिंग के कुछ लाभ भी हैं तो कुछ हानियाँ भी। शिक्षकों ने जो 'ऑनलाइन टीचिंग मोड्यूल्स' बनाए हैं वो उन्हें आगे भी काम आते रहेंगे। पर बच्चों का वो स्कूल का वातावरण, जहाँ वो पढ़ते थे, खेलते–कूदते थे और आपस में बातें करते थे, वो बदल गया। अब उसकी जगह एक कमरे, मोबाइल और लेपटॉप ने ले ली है। जिससे एक तरफ तो उनकी आँखों पे असर पड़ रहा है और दूसरी तरफ उनका बचपन घर की चारदीवारों में सिमट कर रह गया है।

वहीं कॉलेज, शिक्षा व्यवस्था में भी उथल–पुथल है। कॉलेज खाली पड़े हैं, शिक्षकगण जो कभी बोर्ड पर पढ़ाते थे आज नए 'प्लेटफार्म' को सीख रहे हैं। 'प्रयोगशालाएँ' और 'वर्कशॉप' वाले विषय पढ़ाना उनके लिए अत्याधिक मुश्किल है। कई गुण और कलाएँ, जो कि विद्यार्थी आपस में साथ रहकर सीखते थे उससे वंचित हैं। जिसका असर आने वाले समय में साफ दिखाई देगा। इस वक्त का सामना तो करना ही होगा अगर सब साथ मिलकर शिक्षा व्यवस्था से जुड़ी हुई मुश्किलों का हल ढूँढें तो कुछ उलझनें सुलझ सकती हैं। समय कठिन है पर टल जाएगा, वापस सब कुछ फिर से पहले जैसा हो जाएगा। और हम सभी इस वक्त से सीख लेकर आगे बढ़ जाएँगे, और ये वक्त शायद हम सभी को कुछ सिखा जाएगा। अगर भविष्य में फिर इस वक्त से सामना हुआ तो हम शायद बेहतर शिक्षा व्यवस्था के साथ तैयार रहेंगे।

वर्तमान में हमारी सरकार ने कई योजनाओं से इस व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया है। कई 'ऑनलाइन पोर्टल्स' स्कूली शिक्षा के लिए जैसे – 'दीक्षा' ई–पाठशाला और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज' सामने आए जो कि बच्चों की शिक्षा में काफी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। साथ ही कॉलेज शिक्षा में 'स्वयं', स्वयं प्रभा' और ई–पी. जी. पाठशाला सहायक हैं। इस नए परिवेश के फायदे और नुकसान दोनों ही हैं। ज्ञात हो कि इस महामारी ने भारत में सभी स्कूल और कॉलेज 16 मार्च 2020 से बंद कर दिए, असर ये हुआ कि इतने सारे लोगों का अवागमन रूक गया और साथ ही हमारा वातावरण कुछ स्तर तक स्वच्छ हुआ। 'ऑनलाइन शिक्षा' होने से कागज़ पर प्रिंट या लिखने की जगह 'साफ्ट कॉपी' का ज़्यादा प्रयोग हुआ, जिससे कई 'रीसोर्सेज़' पेड़, पेट्रोल का उपयोग कम हुआ। इन सबका ध्यान रखते हुए हम नए परिवेश से कुछ सीख ले सकते हैं और भविष्य में इसका लाभ उठा सकते हैं।

श्वेता सक्सेना, सहायक प्राध्यापक

द्वितीय पुरस्कार

शिक्षा व्यवस्था पर कोविड –19 महामारी का अत्याधिक असर पड़ा है। कोरोना काल में विद्यालय बंद हुए, पढ़ाई बंद हुई। हालांकि सरकार ने समस्या के समाधान के रूप में डिजिटल माध्यम से अवगत कराया है परंतु यह समाधान प्रत्येक की पहुंच से परे है। शिक्षा पर कोरोना महामारी के असर की विवेचना से अनेक बदलावों और चुनौतियों के बारे में पता चल रहा है।

1. अनेक विद्यार्थी पढ़ाई से दूर हो गए क्योंकि विद्यालय बंद हुए।
2. अनेक छात्रों के पास स्मार्ट फोन या उच्च गुणवत्ता का इंटरनेट न होने की वजह से वो शिक्षा से वंचित हो गए।
3. मध्यम वर्ग और निम्न आय वर्ग के छात्रों में रोजी–रोटी और शिक्षा के मध्य चुनाव की स्थिति बन गई।
4. अध्यापकों का वेतन रूक गया।
5. कई छात्र–छात्राओं को स्कूल छोड़ना पड़ा जिसमें लड़कियों की संख्या अधिक है।
6. अध्यापकों को वेतन के लिये इंतजार करना पड़ा या कहिये हाथ धोना पड़ा।
7. ऐसी ही अन्य समस्याओं के लिये स्कूल कॉलेजों ने डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्रदान कराने का अवसर प्राप्त किया। कोरोना काल में उपयोग किये गए डिजिटल माध्यम का भविष्य में शिक्षा में अनेक अवसर प्राप्त होंगे। शैक्षणिक जगत में इसका प्रभाव अधिक लम्बे समय तक रहेगा।
8. इससे अध्यापक और विद्यार्थी संस्थान से बाहर रह कर भी शिक्षा सुचारू रूप से चला सकते हैं। डिजिटल पहल के अंतर्गत स्वयं (SWAYAM) पोर्टल का शुभारंभ किया गया था। इस शिक्षा कार्यक्रम का बहुत से उपयोगकर्ता लाभ उठा रहे हैं।

ASSOCHAM जैसे उच्च स्तर के संकायों के माध्यम से सभी को शिक्षित होने का अवसर मिला। यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि इन माध्यम से हम बड़े–बड़े शिक्षा विदों को सुन सकते हैं और उनसे ज्ञान प्राप्त कर पा रहे हैं। क्योंकि ये सम्भव हुआ है डिजिटल माध्यम से और डिजिटल माध्यम को बढ़ावा मिला कोरोना काल की वजह से।

कोविड–19 के बाद रोजगार के अवसर कम हो जाने की वजह से छात्रों की विदेश में पढ़ने की योजनायें भी प्रभावित हुई हैं। परन्तु अच्छी बात यह है कि यही युवा छात्र अब अपने ही देश में अवसर तलाश रहे हैं या अवसरों का निर्माण कर रहे हैं जो कि भविष्य में अत्याधिक लाभ देने वाला है।

कोविड की कमियों या समस्याओं से सीख लेते हुए इसे सकारात्मक बिन्दुओं से प्रेरणा लेकर हमारे सभी शिक्षण संस्थानों और शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को डिजिटल वितरण कला के सबसे क्रिएटिव तरीके सीखने चाहिए। कोरोना महामारी का एक प्रभाव यह भी है कि शिक्षा संस्थानों के भविष्य में संचालित होने के तरीकों में एक अच्छे बदलाव की उम्मीद है।

स्वाति बिलैया, कनिष्ठ सहायक

तृतीय पुरस्कार

कोविड–19 से हुए परिवर्तनों ने जीवन के सभी पक्षों पर प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष प्रभाव डाला है। वर्षों से चली आ रही शिक्षण एवं परामर्श की पद्धतियों में मूलभूत परिर्वतन हो रहे हैं। इस निबंध के माध्यम से मैं अपने अनुभवों को इन बिंदुओं द्वारा प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

सामाजिक असर – जहाँ मूलभूत शिक्षा के क्षेत्र में अधोसंरचना का काफी अभाव है, ऑनलाइन शिक्षा समाज के इस बंटवारे को और गहरा कर सकती है। इससे गुणवत्ता और शिक्षा की पहुँच भी कमजोर हो सकती है। अतः पूरक प्रयासों के द्वारा समान गुणवत्ता के शिक्षण हेतु ब्लॉक/जिला स्तर पर नीतिगत प्रयासों से बल देना होगा।

तकनीकी सुधार– उच्च गति के इंटरनेट एवं कम्प्यूटर/मोबाइल के अभाव में ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा की पहुँच कोविड–19 काल में कुछ कम हो गई है। तकनीक का सही उपयोग इस क्षेत्र में न केवल काफी मददगार साबित हो सकती है अपितु शिक्षण एवं परामर्श का भविष्य बदल सकती है। ऑनलाइन शिक्षण समूह जैसे बायजू/यूडमी की तर्ज पर सर्व–शिक्षा अभियान को लिया जा सकता है।

संस्थानिक असर–आर्थिक असर – शिक्षा के कई संकाय जैसे वास्तुकला/आर्युविज्ञान/विधि/कानून की शिक्षण तकनीक पर ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण में कई अवरोध प्रतीत होते हैं। इस प्रकार के सभी कार्यक्रम (कोर्स) अध्यापक के भौतिक एवं परामार्शिक दिशा निर्देशन पर निर्भर हैं। परन्तु कोविड 19 के फलस्वरूप यदि हम इस चुनौति को सहीं दिशा में निर्देशित करें तो आने वाले समय में आधार–भूत शिक्षण पर से काफी व्यय कम या दिशा –निर्देशित किया जा सकता है। यह भी विचार योग्य बिन्दु होगा कि शिक्षकों का कार्यकाल/शोध कैसे कोविड 19 के उपरांत बदल जायेगा।

पारिवेशिक/वैधानिक असर

जैसा कि नई शिक्षा नीति में वर्णित है, विविधता एवं गुणवत्ता (शिक्षण–परामर्श) को सुधार पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए नवाचार को बढ़ावा देना होगा। इस संदर्भ में यह भी ध्यान रखना होगा। की कोविड–19 वर्ष (2020–21) के सभी छात्रों को राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर कैसे प्रशिक्षित किया जायेगा।

सभी संबंधित संदर्भों को ध्यान में लेकर प्रथम दृष्टया ऐसा लगता है कि शिक्षा क्षेत्र समूचित रूप से कोविड –19 के कारण प्रभावित हुआ है। परंतु इस विशाल समस्या में से कुछ अनुभव हमें नए अवसर भी प्रदान करते हैं। भविष्य की शिक्षा योजना में हमें इस अनुभव को साथ लेकर चलना होगा।

डॉ. मयंक दुबे, सहायक प्राध्यापक

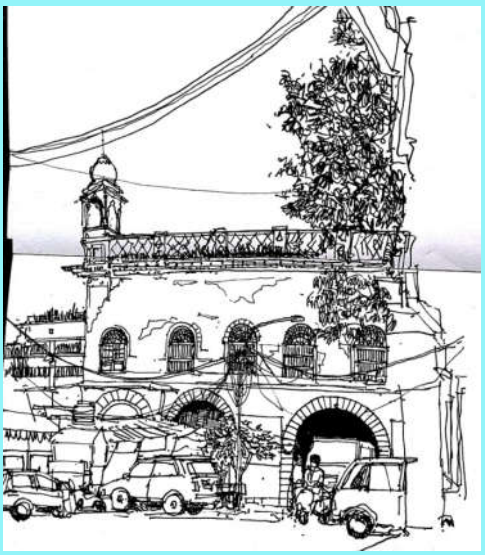

रेखाचित्रः डॉ आनंद वाडवेकर, सह प्राध्यापक

कविता पाठ

प्रथम पुरस्कार

बस मैं एक लड़की हूँ

छोटी थी!
तो माँ हर वक्त साथ चलती थी।
कहती उसका मन नहीं लगता मेरे बिना!
बड़े होने पर समझी,
मैं चिंता उसकी।
वो प्यार से मुझे सूरज बुलाती थी।
भूल जाती थी शायद!
जलना पड़ता है,
सूरज को चमकने के लिये।
मेरी चमक के लिये,
उसने हाथ भी मेरा छोड़ा!!
फिर एक दिन बोली,
उसकी पायल नहीं मिल रही।
तो सुन ओ माँ!
वो जो तेरी पायल खो गई है कहीं,
रखी है मेरी जेब में,
छमछम करती छुम–छुम करती,
एहसास तेरा देती है!
इस नये शहर की भीड़ में,
क्योंकि वो सोचते नहीं कि मैं माँ से दूर क्यों हूँ!
बस जानते हैं की मैं एक लड़की हूँ।
घर पर देखा मैने,
जिंदगी के रंग है कई।
वहाँ तो कोई रंग,
मेरे लिये चुना नहीं गया!
बाहर तो बस कुदरत का रूप जाना है।
परिवार से मिला मुझे खुला आसमान,
कहा गया नापो उंचाई को!
पर कई कहते हैं
क्या होगा इतना मेहनत करके?
उनको जवाब है मेरा,
ये पंख उड़ान के थोड़े भारी से लगते हैं,
सोचती हूँ उतार इन्हे कन्धों को आराम दूँ।
पर ऊंचाई का लालच घटता ही नहीं,
बिना पंख मेरा कंधा मुझे जंचता ही नहीं।
उनको ये सुनना पड़ेगा,
क्योंकि कई लोग सोचते नहीं मेरा हुनर क्या है!
बस जानते है की मैं एक लड़की हूँ।
मुझे शिकायत किसी और से नहीं,
अपनी ही जात से है।
क्योंकि सबसे पहले वही बताती है मुझे,
कि मैं एक लड़की हूँ।
समाज ने तो जैसे बेड़ा उठाया है,
सब सिखाने का
जो उनको जरूरी लगता है।
पर अपनी सीमाएँ बांधने का अपराध!
मैने अपने ही लोगों से सीखा है।
सिखाती है मुझे लिहाज
और सम्मान करना सबका।
साथ ही कई जगह पर
चुप रहने का हुनर बाँटा है।
तो सुनो, हाँ झूठी हँसी चेहरे पर रख,
मैं खुद को खुश दिखा सकती हूँ।
पर नहीं कह सकती सब सहीं हो रहा है,
मेरी मौजदूगी की नजर अंदाजी में!
क्योंकि शायद वो भूल जाते मेरा भी अस्तित्व है!
बस जानते हैं की मैं एक लड़की हूं।
कहते हैं हुनर है मुझ में!
फिर चपुके से तारीफ होती है,
मेरे लिबास की।
कहते हैं समझते हैं मुश्किलें मेरी
वही जिन्होंने मुश्किलें खुद बनाई है।
फिर चुपके से
रख कंधे पर हाथ मेरे
एहसास छुअन का लेते हैं।
कहते हैं सब ठीक होगा
उसी क्षण में
जहाँ मुझे ऐतराज होता है।

कुछ तो ऐसे भी है
जो बस नजरों का खेल खेलते है,
ऐसे देखते हैं कि
मुझे खुद से घृणा होती है।
उनको समझाना चाहती हूँ,
कुछ ऐसी गलतियाँ भी हिस्से में रहने दो,
जिसका कोई लिंक न हो।
कर जाऊँ कोई ना समझी तो,
ये कह कर मत टालो मुझे की
कोई बात नहीं! ये महीने के कड़वे दिन हैं।
होता है यह सबकुछ
क्योंकि वो सोचते नहीं कि उनसे मेरा रिश्ता क्या है!
बस जानते हैं की मैं एक लड़की हूँ।
अरे एक बात और!!
बे–स्वाद खाने से मेरी परख कैसे हुई?
जब स्वाद सबकी जुबान में आता है।
बिखरा घर मेरी बदनामी क्यों?
जब हाथ उनके भी वैसे ही चलते है।
रंगों का खेला मेरे सर क्यों?
जब हर रंग उनको भी वैसे ही दिखाई देता है।
कलम चलाने को क्यों शान समझते हो!
जब वजन दिमाग का मेरे जैसा सबका है।
औलाद को समझना कैसे बस मेरा रिश्ता है?
जब अंश वो उनका भी होता है।
वो पार तो करने देते हैं दहलीज़!
पर वो उनकी मजूंरी की मोहताज क्यों है?
आजादी तो है सब कुछ तय करने की!
पर वो उनकी सहूलियत की चाल क्यों है?
चलिए छोड़ दी मैने ये बराबरी की बातें!
काम की बात करते हैं,
क्योंकि मैं जानती हूँ मैं वक्त बदल सकती हूँ!
और ये भी जानती हूँ कि मैं एक लड़की हूँ।

सरोज वर्मा, कार्यालय सहायक

रेखा चित्र : डॉ आनंद वाडवेकर, सह प्राध्यापक

द्वितीय पुरस्कार

ओ री मुनिया !!!

ओ री मुनिया !!! बहुत खेल लिया गुड्डे–गुड़ियों का ब्याह,
चल अब काम पे चलते हैं, नहीं तो अम्मा मारेगी।
सपनों की दुनिया हमारे लिए नहीं है,
''आज कचरा नहीं बीना तो क्या खाएंगे''? कहके हमें दौड़ाएगी।
चल–चल सँझा होने को है,
क्या पता? आज हमें भी कचरे में, पिज़्ज़ा का एक टुकड़ा मिल जाये।
मिल बाँट के खाएंगे दोनों,
उसे खाकर ही, शायद आज पेट भर जाये।
11 नंबर की मालकिन ने मकान ख़ाली किया है,
उसमें टूटे–फूटे बर्तन और कपड़ा–लत्ता बीन के लाएंगे।
दिवाली आने वाली है,
वो कपड़ा पहन के दिवाली के दिये जलाएंगे।
आज पंडित की दुकान की सफाई हुई है,
उसमें टॉफी–बिस्कुट और कॉपी–पेंसिल बीन के लाएंगे।
बापू कहके गए हैं '' ठाकुर के यहाँ शादी है,
आ जाना तुमलोग, चुपके से रस मलाई खिलाएंगे।

लोगों के लिए खुशियां बिकती हैं,
हमें तो कचरे के ढेर में ही पड़ी हुई मिल जाती हैं।
हमारी खोली में बारिश की बूँदें भी हैं,
माचिस की डिबिया से होती है, रातों की रोशनी,
तो सरसराती हवा चूम लेती है, हमारी पेशानी।
यही तो है हम कचरा बीनने वालों की कहानी,
तो छत के फटे टाट से दिखता नीला आसमान।
गंदे पानी की गंध से महकता है मोहल्ला,
तो सूरज की किरणे पवित्र करती हैं, यहाँ का ज़र्रा ज़र्रा।
यही है, हम कचरा बीनने वालों की कहानी।।

अनुपमा भारती, सहायक प्राध्यापक

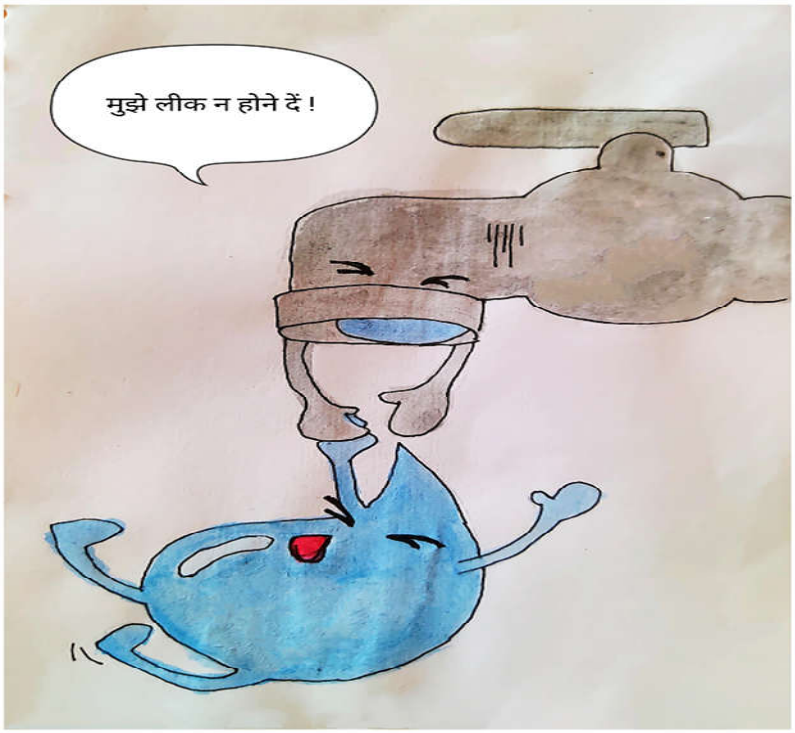

रेखाचित्र जल संरक्षण की बात करते हैं। यह दर्शाता है कि पानी बचाने के लिए आपको कोई बड़ा काम नहीं करना है। पानी बचाने की दिशा में एक छोटा सा योगदान भी मूल्यवान हो सकता है। टैप बंद करो। इसके अलावा इसे लीक न होने दें।

श्रीपर्णा साहू
शहरी नियोजक / जी.आई.एस. विश्लेषक / शोधकता

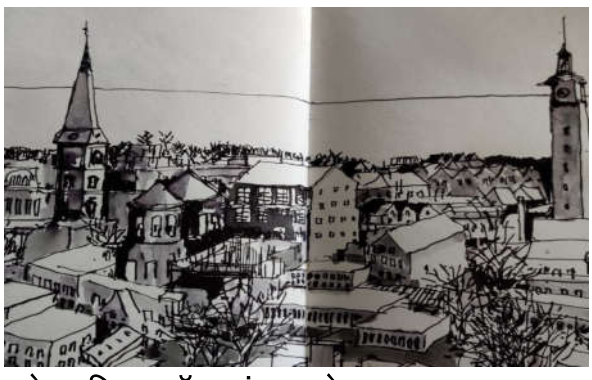

रेखा चित्र : डॉ आनंद वाडवेकर, सह प्राध्यापक

अभिव्यक्तियाँ.....

उड़ान

मेरी कविता को उड़ा ले जाने पर हवा चली, कागज उड़ रहा था और चीख रहा था ''मुझे रहने दो!''।
मैंने कहा, 'हे भगवान' और उसके पीछे भाग गयी।

कविता मेरे जीवन की तरह थी।
कागज ने पेड़ों, लोगों और रंगों को देखा।
इसने किसानों और विक्रेताओं के चेहरे पर छोटी सी खुशी देखी।

मेरा उसके पीछे भागना मेरी जान बचाने जैसा था, उसके पास इतने सुंदर शब्द और इतने सुंदर विचार थे कि कोई भी व्यक्ति मुस्कुरा सकता था।

जल्द ही मैं अंत में आ गई क्योंकि झील मेरे सामने थी, कागज एक नाव पर चुपचाप उतरा। एक बच्चे ने उसे उठाया, पढ़ा और उल्लास से नाचने लगा।

मेरी भौंहें चढ़ गईं, एक मुस्कान जादू की तरह आई, मैंने आहभरी और यह कहते हुए घर वापस चली गयी, 'आखिरकार यह अंत दुखद नहीं था'

आनंदी मित्रा
पुत्री, संन्मार्ग मित्रा
सहायक प्राध्यापक

बनारस : एक अनुभूति

कहते हैं जिसे काशी, अस्तित्व है यहाँ भगवान शिव का, गंगा मैया का वास है यहाँ...
और स्वर्ग का द्वार खुलता है जहाँ...!!
कहते हैं इसे बनारस शहर जो है बहुत ही पावन
यहां सबका ही चलता रहता है आवन जावन...!!
यहाँ के गंगा घाट की बात जरा निराली है,
सबको मिलता है सुकून, यही बात सुहानी है..!!

अस्सी घाटों की यहा अलग अलग कहानी है,
सबको अपना सा करने की बात उन्होंने ठानी है!!
कहते हैं इसे देवनगरी..
अलग ही है यहां की कला और संस्कृति..!!
बनारसी साड़ी की एक अलग ही है कहानी,
लुभाती है सबको यही तो बात है न्यारी..!!
गंगा जी के आरती की यहाँ अलग ही है महक,
लहरो की ईठलाहट जैसे बचपन की हो चहक...!!
कुछ तो खास बात है यहां बिताई हर सुबह और शाम में...
मिल जाता है सबको सुकून ऐसी बात है यहां के माहौल में..!!
बनारस एक नाम नहीं एहसास है...
इसलिए ये जगह थोड़ी खास है..!!

मयूरी मोरेश्वर कटारमल
छात्रा, द्वितीय वर्ष

संविधान की तोरण

भांति भांति के पुष्प यहां पर,
भांति भांति के पर्ण, एकता के सूत्र में पिरोती संविधान की तोरण
कोस–कोस पर पानी बदले देश है ऐसा मेरा
हर पानी को पानी रख संविधान है ऐसा मेरा
बोली की जो बात करूं तो चार दिन में बोलूं एक
पूरा जीवन कम पड़ जाए, फिर भी रह जाएं अनेक
ऐसी भिन्नता को एकता में पिरोती संविधान की तोरण
खाने की मैं बात करूँ तो, एक रखे पानी को मैं खाऊँ
गुलाब, बर्फ, चमचम, संदेश बड़े शौक से खाऊँ
ऐसी विविधता मेरे देश की, संविधान की तोरण से सजाऊँ
आज उठना, आगे बढ़ना, बेड़िया तोड़ना
राहें जोड़ना करना सपनों को साकार
यही सिखाती हम सबको संविधान की हुंकार
अकेले चलो, चलते चलो, सब चलो सबको देना यह आदेश
पर किसी का हाथ न छोड़ता संविधान का हर संदेश
आओ बताऊँ इस तोरण में क्या–क्या मैने पिरोया,
आशाएँ, सपने और हौसलों को जोड़ के तोरण बनाया
ऐसा तोरण मैने बनाकर हर द्वार पर लगाया
ऐसी विविधता को जोड़कर संविधान का तोरण बनाया।

रमेश पी. भोले
सहायक प्राध्यापक

अनुभव

जिंदगी की तकलीफें सिखाती है जीना हमें,
आम से खास बनाती है हमें।

जो भी करेगा इनका सामना
सारी तकलीफें होंगी फना
सच कहती हूँ यकीन मानों
जो भी करना है पूरे दिल से करो

एक कदम भी पीछे न हटने पाए
कोई दीवार हो सामने वो रहने न पाए
करो जो भी तुम्हे करना पड़े
बाद में काश ! न कहना पड़े
याद रखना दिल न दुखे किसी का
सहीं करना और कहना ईमान बनाये सभी का

(डायरी अनुभव की दिनांक 13/01/2013
(मनरूप)

रेनु पाठक (मनरूप)
पुस्तकालय सहायक

भूख

वो जिसने आज त्याग दिये अपने प्राण
न जाने वो ले गया कितने की जान।
माँगा था उसने केवल अन्न का दान
कहाँ चाहा था कोई विशेष सम्मान।
मेहमान बनकर आये थे तेरे बुलाने से
मालूम न था निकलेगा कातिल मेज़बान।
चादर हटाता पत्थर को जगाता नहीं उसे भान
किलकारियां भरकर मुर्दे से खेलता वो नादान।
मूक बने यूँ खड़े हैं जैसे नहीं कुछ ज्ञान
इंसानियत को मारकर कैसे बनेगा तू इंसान

कुश श्रीवास्तव
लेखापाल

तुम

तुम क्या गए सब ले गए
रूह ले गए सांस ले गए।
जिनसे रोशन थी मेरी रातें
वो नींद ले गए वो ख्वाब ले गए।
बीतने को तो बीतेगी ये जिन्दगी
जिन्दा रहने के पर अरमान ले गए।
जाऊँ कहाँ कि कुछ मालूम नहीं
तुम रास्ता ले गए तुम मंजिल ले गए।

कुश श्रीवास्तव
लेखापाल

हिन्दी

हिन्दी केवल भाषा नहीं है
यह माँ की परिभाषा है।
हिन्दी हमारी शान है
हिन्दी हमारी पहचान है।
हिन्दी में प्रेम का भाव है
हिन्दी हमारा स्वभाव है।
हिन्दी भारत का सार है
हिन्दी हमारा व्यवहार है।
मुझे सबसे प्यारी हिन्दी है
ये भारत माँ के माथे की बिंदी है।

चित्रार्थ सिंह राठौर, पुत्र, पवन सिंह राठौर
सम्पदा सह सुरक्षा अधिकारी

सुकून

चलते चलें हमेशा, किसी राह पर तो मिलेगा
दूर किसी बाग में कभी तो पलाश खिलेगा
चाहे कितना भी हो जाओ गम–ओ–बेज़ार
कहीं किसी जहाँ में तो सुकून मिलेगा।

ये दर–ओ–दीवार ये मिलकियत सब बेहिफाज़त
ये उम्मीदों से बावस्ता सारी ज़लालत
ये ख्वाब ये उलझनें ये कोशिशें बेहिसाब
सबकुछ न कर पाने की नदामत–ए–ताब
हकीकत में न सही बंद आँखों में मिलेगा
कहीं किसी जहाँ में तो सुकून मिलेगा।
कहते हैं इंसान में होती है बहुत कुव्वत
पर कमबख्त ये मुख्तसिर सी जिन्दगी बेमुरव्वत
हर सांस पर लगे कि धडकनें न रुक जाएं
पर ख़ालिक की है मर्ज़ी जब तलक चलाये

इस ज़मीन में न सही आसमान में मुकम्मल
मिलेगा
कहीं किसी जहाँ में तो सुकून मिलेगा।

आलिया
व्यैक्तिक सहायक

सुविचार

''यदि आप अपना जीवन सुखी होकर जीना चाहते हैं तो सदैव सोने से पहले जरा सोचें/ विचार करें कि क्या हमने अपना दायित्व (परिवार) पूरे लगन, मेहनत से निभाया है जितना आप कर सकते थे एवं आप ने कोई ऐसा काम तो नहीं किया या हो गया जिससे दूसरों को परेशानी, हानि या दुख उठाना पड़े या सहना पड़े।''

''हम कितने मजबूर होते हैं अपनी इतनी बड़ी जिंदगी के कुछ पल हम जिनके साथ रहना/ बिताना चाहते हैं वो कुछ पल भी नहीं दे पाते। जो शायद फिर कभी न मिले और जब वक्त मिलता है तो हमें वो नही मिलते जिनके साथ हम रहना चाहते हैं।

''यदि तुम्हें सफलता पानी है तो इसके लिए अपने ऊपर विश्वास कर पाना आवश्यक है। अपने को

सफल/टॉपर बनाये रखने के लिए काफी पहल, उत्साह और कठोर परिश्रम की आवश्कयता होती है''।

जितेन्द्र कुमार
तकनीकि सहायक
जी.आई.एस.

शब्द क्या है ?

एक शब्द बनाने के पीछे स्वर (vowel) एंव व्यंजन (consonant) का उपयोग होता है। ये बात सत्य है, इससे हम नहीं हट सकते हैं। व्यंजनों को रूप देने का काम स्वर करते हैं। ये बात भी सत्य है। विश्व की किसी भी भाषा में इन्ही दो वर्णो के रूप का उपयोग होता है स्वर और व्यंजन। अगर कोई ऐसी भाषा है जिसमें ऐसा नहीं है तो बतायें। पर इस लेख से पढ़ने वालो को चुनौती देना चाहूँगा की वो एक तर्क वाली व्याख्या को गलत कहें।

अंग्रेजी भाषा के व्यंजनों के उच्चारण को पढ़िए एक बार a–ए, b–बी, c–सी, d–डी, e–इ ऐसे करके पूरी वर्णमाला है जो की 26 अक्षरों के मेल से बनी है और विश्व भर में पढ़ाई भी जाती है। आप इस बात को ध्यान रखिये की यह रोमन लिपि है। चलिए, संस्कृत वर्णमाला देखते हैं – क, ख, ग, घ करके आदि वर्ण है । इस लिपि को कहते है देवनागरी। अब नीचे दी गयी लिपि को समझिये। यह ब्राह्मी लिपि है। मैं इंटरनेट को इसके लिए धन्यवाद देना चाहूंगा। इस लिपि के अक्षरों के sound (ध्वनि) को समझिये।

आप एक बात समझेंगे की बोलने के स्वर सबके उसी प्रकार से हैं जैसे देवनागरी लिपि में है। इसका अर्थ सपष्ट है की लिपि बदल जाती है परन्तु भाषा के स्वर एवं व्यंजनों में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ है। परन्तु यहाँ पर हिन्दी बोलने वाले लोग मार खा गए और तर्क भूल कर एक भाषा को विज्ञान की भाषा मानकर सत्य से अपने आप को अपरिचित करने लगे।

चलिए, एक तर्क देखते हैं – हिन्दी का एक शब्द जब बनता है तब उसमें नियम साधारण होते हैं। नियम ये है की व्यंजनों के साथ आप स्वर जोड़ते हैं उस शब्द को किस प्रकार से बोला जाए उसकी व्याख्या करते हैं। उदहारण के रूप में शब्द लिया – धन = ध + न, इसको एक बार और तोड़ेंगे तो आपको मिलेगा ध+अ+न+अ। क्षमा चाहूंगा कि हलन्त का उपयोग नहीं कर पाया । क्यूंकि वर्ण आधा भी होना चाहिए । अब एक तर्क है जो आपको उपयोग करना है आप किसी भी हिन्दी में लिखे शब्द को लीजिये, नहीं तो ऐसी किसी भी भाषा को लीजिये जिसमे शब्द बनाने के नियम इतने साधारण हों। यह साधारण नियम अगर किसी भाषा में है तो वह भाषा उचित है।

क्योंकि भाषा का निर्माण लोग करते है इसलिए यहाँ किसी भी भाषा को नीचे नहीं दिखाया जा रहा है। पर साधारण लेख पढ़ने में लोगों को आनंद नहीं आता है। तो उस आनंद को पाइये और आगे पढ़िए। चलिए कुछ शब्द लेते है अंग्रेजी भाषा के - word, cord, lord क्या आपने समझा – इन शब्दों को बोलने के लिए आपको 2 नियम जानने होंगे पहला – c , l के आगे ord को लगाकर 'ओ* sound

आता है। पर w के ord आगे लगाकर 'अ' का sound आता है । शब्दों को बोलने के इन्ही नियमो के कारण इस भाषा को सरल नहीं कहा जा सकता है। एक मनुष्य को तो आप फिर भी बोल देंगे की ये ऐसे पढ़ो। पर एक मशीन को कैसे बोलेंगे ? यही बात नासा के वैज्ञानिक समझ गए और उन्होंने देवनागरी लिपि या फिर संस्कृत भाषा को उत्तम माना। सदियों से भारत के लोगों ने जिस भाषा का विकास किया उसे बोलना कठिन नहीं है और न ही उसे समझना कठिन क्यूंकि व्याकरण के साथ–साथ भाषा को बोलने की विधि भी निश्चित रूप से नियम को मानती है। हलन्त लगाइये और वर्ण आधा हो गया। ये कितनी साधारण और कितनी अचम्भा करने वाली बात है की इस प्रकार की भाषा के वर्णों को नकार दिया पर अंग्रेजी बोलने वाले महानुभाव इसे नहीं समझेंगे। क, ख, ग, घ तो निम्न स्तर भाषा के वर्ण है। चलिए, अंग्रेजी बच्चों के मन को ठेस न पहुंचे तो में कुछ और शब्द लेता हूँ । cow = काऊ , coward = कावर्ड । दोनों शब्दों c के बाद व का उपयोग पर है किसी के साहस की cow को काव बोल दे, वो बोलेगा तो काऊ ही, नहीं तो अंग्रेजी बच्चे उसे बोलेंगे mr your pronunciation is not right. कावर्ड में भी काऊ है तो sound क्या है ये कैसे पता चलेगा। इसलिए इस बात को बुद्धि में डालिये की यहाँ मूर्ख बनाया जा रहा है और वो भी बहुत बड़ा वाला। आज हालत ये है कि अंग्रेजी बोलने वाले किसी की हंसी नहीं उड़ा पाते है। उड़ाएं भी कैसे जब नासा ने ना–ना बोल दिया। एक प्रयोग आप अपने से करिये और समझिये की भाषा के बोलने वाले नियम कितने सरल होने चाहिए। उतना होने के बाद भी अगर मनुष्य सरल उच्चारण को छोड़कर वो पकड़े जहाँ उच्चारण कैसे करना है उसके लिए पुस्तक छाप कर विश्व भर के पुस्तकालयों में रखा जा रहा है (oxford dictionary)। तो ऐसी भाषा सरल कैसे हो सकती है ? आज समय ये हो चुका है की एक ही भाषा के American, UK, Indian, Japanese version बने हुए है । ये कहिये की कई वर्षो तक आपको मूर्ख बनाया गया। इस राष्ट्र में ऐसे लोग है जो बोले गए शब्दों को 5000 वर्ष तक स्मरण कर पाए। उनको बाहरी चकाचौंध ने ही नीचे कर दिया।

अब आपके लिए एक कार्य है। आप जो भी भाषा बोलते है उसमें बोलने एवं लिखने के नियम को समझें। वो नियम, नियम नहीं है, जो स्थिर न हो । आपकी भाषा सरल थी शायद यही कारण रहा की आपकी ही संस्कृत भाषा सीखकर आपके ही गलत अनुवाद बनाकर विश्व भर में भारत को एक पिछड़ा देश बना दिया। नहीं तो फारसी लोग तो आज भी आपके दिए एक दो तीन का उपयोग अपनी भाषा में

कर रहे है। आठ को अष्ट की जगह हष्ट कहने से आप मूल को अलग नहीं कर सकते हैं। ज्यादा सरल होना भी हानिकारक रहा है। भारतीय लोग सरल पहले थे और आज भी है। नहीं तो इतनी सरल भाषा का निर्माण कैसे करते? ये अपने आप में एक खोज हो सकती है पर आपकी सरलता को किस प्रकार से दुरुपयोग किया जा सकता है वो आप 1947 से पहले देख चुके हैं।

आपको लिखने से लेकर बोला कैसे जाए एक–एक शब्द को, ये सीखने के लिए अंग्रेजी भाषा के कोचिंग भी है। इसलिए going को गोइंग बोले पर coming को कोमिंग बोले, कमिंग नहीं। नियम सरल ही नहीं है। अंत मैं कह रहा हूँ, भारतीय हूँ, तो आप इस बात पर भी तर्क देकर गलत या सहीं प्रमाण दें। आप ये तर्क करिये और भाषा के इस खेल को समझिये। स्वर और व्यंजन समझ गए तो कोई ऐसी भाषा नहीं जिसे समझा नहीं जा सकता। अंत में यही कि भाषाओं को जानने की चेष्टा ना छोड़ें क्यूंकि कहीं न कहीं, किसी भाषा की, किसी लिपि में, आपको वश में करने की प्रक्रिया चल रही है और वो आगे भी चलती रहेगी।

अभिषेक (छात्र)
द्वितीय वर्ष, परिवहन योजना विभाग

जो दूसरों के दोष ढूंढते हैं, वे स्वयं के दोष नहीं जानते

एक राजा को जब पता चला कि मेरे राज्य में एक ऐंसा व्यक्ति है जिसका सुबह–सुबह मुख देखने से दिन भर भोजन नहीं मिलता है। सच्चाई जानने के इच्छा से उस व्यक्ति को राजा ने अपने साथ सुलाया। दूसरे दिन राजा की व्यस्तता ऐसी बढ़ी कि राजा शाम तक भोजन नहीं कर सका, इस बात से क्रुद्ध होकर राजा ने उसे तत्काल फांसी की सजा का ऐलान कर दिया। आखिरी इच्छा के अंतर्गत उस व्यक्ति ने कहा "राजन–मेरा मुंह देखने से आप को शाम तक भोजन नहीं मिला, किंतु आप का मुंह देखने से मुझे मौत मिलने वाली है। यह सुनकर राजा लज्जित होता है और उसे संत वाणी याद आयी.!

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो मन खोजा आपना, मुझ सा बुरा न कोय।।

संकलन
सिस्ता श्रीनिवास राव
निज सहायक

सामाजिक व्यवस्था एवं आध्यात्मिकता

मनुष्य सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन में संतोष जनक विकास की ओर अग्रसर होता हुआ प्रतीत होता है, जो मन में विकास की सही परिभाषा को समझने की लालसा जगाता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने विकास को कुछ इस प्रकार से परिभाषित किया है "A comprehensive economic, social, cultural and political process, which aims at the constant improvement of the well & being of the entire population and of all individuals on the basis of their active, free and meaningful participation in development and in the fair distribution of the benefits resulting therefrom"[2]

जिसका हिंदी अनुवाद "एक व्यापक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रक्रिया, जिसका उद्देश्य पूरी आबादी और सभी व्यक्तियों की भलाई में उनकी सक्रिय, स्वतंत्र और सार्थक भागीदारी के आधार पर विकास और इससे होने

वाले लाभ का उचित वितरण में निरंतर सुधार करना है। इसी प्रकार किसी देश या संस्थान का विकास उसमें भागीदारों को उचित वितरण का लाभ मिल सके ऐसी प्रक्रिया का निर्माण कर प्रत्येक स्तर पर सक्रिय, स्वतंत्र और सार्थक भागीदारी को सुनिश्चित कर अपने विकास को सुदृढ़ रख सकते हैं।

प्रक्रिया को प्रत्येक स्तर में कुछ नियत–नियमों के तहत सभी भागीदारों को सर्वोपरि रखकर बनाया जाता है। तथा उन नियमों के अंतर्गत उस देश या संस्थान को चलाया जाता है। समय–समय पर नियमो एवं कार्य प्रणाली में त्रुटियों को खोज कर या सामने आने पर बदलाव मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखकर किये जाने चाहिए। विकास जो कि हर मनुष्य का अधिकार है तथा वह सबके लिए समान होना चाहिये उसमे कोई भी भेदभाव नहीं होना चाहिए। उदहारण के तौर पर किसी देश या संस्थान की स्थापना करते समय संविधान (नियमो) को बनाया जाता है जिनका पालन करने और करवाने की जिम्मेदारी अलग–अलग नेतृत्व, अधिकारियो, कर्मचारियों एवं सभी घटकों की होती है।

जिम्मेदारी जो की समय–समय पर नियम व प्रक्रिया के अंतर्गत बदलती रहती है तथा जो जिम्मेदारों की उदासीनता या पक्षपातपूर्ण कार्यो के कारण विकास को प्रभावित करती है जिससे भ्रष्टाचार का जन्म होता है। अब आपके मन में सवाल खड़ा होगा कि भ्रष्टाचार क्या हैं? वैसे तो यह शब्द बड़ा प्रचलित और जाना पहचाना सा लगता है क्योंकि अधिकतर लोगों को अपने जीवन में इससे सामना जरुर हुआ होगा तथा सभी लोग इस शब्द के अर्थ से भलीभांति परिचित होंगे जो की भ्रष्ट + आचार दो शब्दों से बना है अर्थात आचरण की अशुद्धि।

अगर हमें इस आचरण की अशुद्धि से छुटकारा पाना है तो निश्चित रूप से मेरा मानना है की मनुष्य को अपनी अंतरात्मा को जगाना होगा। अंतरात्मा को जगाने के लिए मैं यहाँ एक **"उपनिषद"** की कहानी को उदधृत करना चाहूँगा, जिससे मनुष्य स्वयं से सबकी ओर अपने द्रष्टिकोण को चरितार्थ कर पायेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

"प्राचीन काल में एक नगर में एक चोर जिसका नाम सत्यवादी था, रहता था उसकी खासियत यह थी की वह चोरी करते समय अगर पकड़ा जाता था तो सच स्वीकार कर लेता था कि मैं चोर हूँ मेरा नाम सत्यवादी है। एक बार वह एक जगह पर चोरी करने गया तो वहाँ पर उसे सिवाय पुराने कपड़ों के कुछ नहीं मिला तो वो अपने मन में विचार करता है कि मै क्यों न यहाँ किसी व्यक्ति से किसी धनी व्यक्ति का पता करूं जिससे मुझे ऐसी जगहों से छुटकारा मिले जिसमे परिश्रम और जोखिम समान होता है और मिलता कुछ नहीं, तो वहीं पड़ोस में एक व्यक्ति खड़ा दिखा तो उससे सत्यवादी ने पूछा की आपके मोहल्ले में धनी व्यक्ति कौन है वह व्यक्ति सत्यवादी को एक नाम बताता है वह है श्रेष्ठी कोटिकर्ण।

कोटिकर्ण वहाँ का धनी व्यक्ति था तथा उसको अपने धन, वैभव का बहुत अधिक अहंकार था। एक बार उसी गाँव का व्यापारी जिसका नाम श्रेष्ठी धनञ्जय था, नदी के माध्यम से व्यापार करता था, एक बार लुटेरों ने बहुमूल्य वस्तुओं से भरी उसकी नौकाओं को लूट लिया, अब श्रेष्ठी धनञ्जय के सामने भरण पोषण की भी समस्या खड़ी हो गयी तब श्रेष्ठी धनञ्जय श्रेष्ठी कोटिकर्ण के पास गया और बोला श्रेष्ठी मुझे कुछ मुद्राओं की आवश्यकता है तो प्रतिउत्तर में श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने उससे कहा श्रेष्ठी धनञ्जय मैने तुमसे कहा था एक दिन मैं तुम्हे खरीद लूँगा तो बताओ गिरवी रखने के लिए क्या है तुम्हारे पास, उसने कहा श्रेष्ठी मेरे पास गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं है, तब कोटिकर्ण की नजर व्यापारी धनञ्जय के हाँथ की ऊँगली पर पहनी हुई अँगूठी पर पड़ी, श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने कहा ये

अँगूठी रख सकोगे, उत्तर में व्यापारी ने कहा श्रेष्ठी, ये अँगूठी मेरी कुल परम्परा की प्रतीक है, तब कोटिकर्ण ने कहा क्या तुम अपनी कुल परम्परा को गिरवी रख सकते हो, इस पर व्यापारी चुप रहा और अँगूठी गिरवी रखकर कुछ मुद्राएं लेकर अपने घर चला गया।

इधर श्रेष्ठी कोटिकर्ण एक बार नदी के घाट पर खड़े होकर दान दे रहा था दान देते समय अहंकार बस उसने तीन बार और कोई याचक है यह कहकर आवाज लगाई, तभी वहाँ एक महात्मा उपस्थित हुए और कहा ! याचक यहाँ हैं, इस पर श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने कहा माँग ले याचक क्या माँगता है, महात्मा ने उससे कहा कि तुम मुझे क्या दे सकते हो, मेरा पेट तो पेड़ों की जड़ों से भी भर जाता है, दे ही सकते हो तो मुझे अपना अहंकार दे दो, इस पर श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने कहा अहंकार कोई वस्तु नहीं हैं याचक जो मै तुम्हें दे दूं, कुछ और मांगो जैसे सोना, चाँदी, धन, वस्त्र, अन्न कुछ भी तब महात्मा ने कहा **"सोना, चाँदी, साम्राज्य देना आसान है श्रेष्ठी! अहंकार देना मुश्किल, पहचान खुद को पहचान, जो तू दिखता है वो तू है नहीं, जो तू है उसे देखना नहीं चाहता, पहचान खुद को पहचान"** और महात्मा वहां से चले गए। अब श्रेष्ठी कोटिकर्ण के मन में वही घटनाक्रम चल रहा था कि उस याचक के सामने आज मै अपने आपको छोटा और बेबस महसूस कर रहा हूँ, याचक के लिए धन, दौलत, साम्राज्य का कोई अर्थ नहीं, माँगा भी तो क्या? अहंकार। **"पहचान खुद को पहचान, जो तू दिखता है, वो तू है नहीं, तो फिर मै कौन हूँ, और श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने निश्चय किया, कि मैं ये जानकर रहूंगा, कि मै कौन हूँ"।**

उसी समय सत्यवादी चोर श्रेष्ठी कोटिकर्ण के घर में सेंध लगाते पकड़ा गया लोग उसे दंड देने लगे ये शोर सुनकर श्रेष्ठी कोटिकर्ण भी वहाँ पहुंचे और लोगों को चोर से अलग किया इसके बाद चोर ने अपना परिचय दिया तथा श्रेष्ठी कोटिकर्ण को व्यापारी धनञ्जय की जो अँगूठी बहुत अपमान करते हुए गिरवी रखी थी उसे वापस करने का विचार सत्यवादी चोर के माध्यम से उसके मन में आया तथा सत्यवादी चोर को कोटिकर्ण ने बहुत धन दे कर उस अँगूठी को चावल के अन्दर रखकर व्यापारी धनञ्जय के घर पर चुपके से रखवा दी। अँगूठी जब व्यापारी धनञ्जय को मिली, तो उसने अगले दिन अँगूठी श्रेष्ठी कोटिकर्ण को वापस करने की बात कही, इस पर उसकी पत्नी ने कहा अब ये अँगूठी उस घमंडी को क्यों लौटाओगे तो व्यापारी धनञ्जय ने कहा क्योंकि ये उन्होने ही लौटाई है, वो अपमान वाली बात याद करते हुए सो गए परन्तु उसी रात व्यापारी धनञ्जय मृत्यु को प्राप्त हो गए।

इधर श्रेष्ठी कोटिकर्ण की अंतरात्मा में महात्मा के द्वारा कही गई बातों का अंतर द्वन्द चल रहा था और एक दिन श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने अपनी सारी संपत्ति दान कर "मै कौन हूँ" की खोज में निकल पड़े, और एक दिन मैं कौन हूँ की खोज पूर्ण हो जाने पर वर्षो बाद वापस अपने नगर को आ रहे थे तभी रास्ते में कुछ लोग कोटिकर्ण को देखकर उनसे कहते हैं हमने पहले भी आपको देखा है। हाँ!, श्रेष्ठी कोटिकर्ण, इस पर श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने कहा "अब ये शरीर उस नाम से अलग है, अब मैं उस शरीर को नहीं पहचानता, उस शरीर का एक विशाल भवन था, इस शरीर का सारा संसार है, पहले वो शरीर सबको अलग–अलग देखता था, अब ये शरीर स्वयं को सब में देखता है, वो दुनिया जीतना चाहता था, अब मैं खुद को जीतना चाहता हूं, तब मैं भिक्षा देता था, अब मैं भिक्षा लेता हूं, और फिर भिक्षु कोटिकर्ण के नगर लौटने का समाचार आग की तरह नगर में फैल गया, लोग हजारों की संख्या में श्रेष्ठी कोटिकर्ण को देखने उमड़ने लगे, कभी एक स्थान पर खड़ा हो भिक्षा देनेवाला आज घर–घर जा भिक्षा माँग रहा है। और एक दिन भिक्षु कोटिकर्ण उसी व्यापारी श्रेष्ठी धनंजय के यहाँ जिसकी एक समय अँगूठी गिरवी रखी थी के द्वार पर जाकर भिक्षा माँगी व्यापारी श्रेष्ठी धनंजय की पत्नी ये देख के

भिक्षु कोटिकर्ण उसके दरबाजे पर भिक्षा माँगने आये हैं तो उसने भिक्षा के साथ वह अँगूठी भी भिक्षा में छुपाकर दे दी।

जब भिक्षु कोटिकर्ण भोजन करने बैठे तो भोजन में वह अँगूठी मिली तब भिक्षु कोटिकर्ण को श्रेष्ठी कोटिकर्ण की अपनी पुरानी अहंकार से सनी हुई भूल का अहसास हुआ और वो बहुत पश्चाताप का भान करने लगे, तत्पश्चात कोटिकर्ण नगर में रहकर सत्संग करते भिक्षा माँगकर भोजन करते, एक दिन सत्संग चल रहा था तभी सत्यवादी किसी के यहाँ चोरी कर रहा था तभी कुछ लोगों ने उसे देख लिया तो वह भागकर सत्संगियों के साथ शामिल हो सिपाहियों से अपनी जान बचाई, सत्संग समाप्त होने के बाद सभी लोग निकल गए सिवाय सत्यवादी के, सत्यवादी ने जब यह सुनिश्चित कर लिया कि अब कोई खतरा नहीं है तभी वह उठा और जाने लगा, पीछे से आवाज आती है सत्यवादी! सत्यवादी पीछे मुड़कर देखता है तो एक महात्मा सामने थे, सत्यवादी ने कहा आप मुझे जानते हैं इस पर भिक्षु कोटिकर्ण ने कहा,"जो तुम दिखाई देते हो वो तुम हो नहीं, सारा पुरुषार्थ तो अपने को पहचानने का हैं", सत्यवादी बोलता है श्रेष्ठी कोटिकर्ण, तब कोटिकर्ण ने कहा सत्यवादी तुम हार गए, याद है, मुझे लूटने का वादा, (जब तुम मेरे घर में सेंध लगाते पकड़े गये थे उस दिन तुमने मुझसे कहा था कि एक दिन मैं आपको जरुर लूटुँगा) अब तुम मुझे ना लूट पाओगे, इस पर सत्यवादी कहता है क्षमा प्रभू बचने का कोई और रास्ता न था, इसलिए यहाँ पर शरण ली, तब भिक्षु कोटिकर्ण कहते हैं आज तुम मेरे ऊपर एक और उपकार करो, और वह अँगूठी सत्यवादी को देकर कहते हैं आज उस मार्ग से जाना जो सही हो, सत्यवादी उस व्यापारी श्रेष्ठी धनंजय के दरवाजे पे दस्तक देता है, अन्दर से आवाज आती है कौन है भाई प्रतिउत्तर में सत्यवादी कहता है चोर हूँ माई, इस पर दरबाजा खोलते हुए व्यापारी की पत्नी कहती है तो फिर मेरा द्वार क्यों खटखटा रहे हो, सत्यवादी तुरन्त ही अँगूठी को आगे बढ़ाकर कहता है इसको लौटाने आया हूं इस पर व्यापारी की पत्नी कहती है "अब सारे बंधन काट चुकी हूं अतीत से अतीत की अनुभूतियो से सुख, दुःख से और भविष्य के भय से अब ये मेरे किसी काम की नहीं तुम्हारे काम की हो तो तुम्ही ले जाओ चोर तो हो हि", और दरबाजा बंद कर लिया। और इसके बाद सत्यवादी चोर विचार करने लगा **"वह क्या है जिसे पाने के लिए कोटिकर्ण ने अपना सबकुछ लुटा दिया और सब कुछ लुटाकर उन्होंने क्या पाया, क्यों इस बुढ़िया को अब इस अँगूठी का मोह नहीं, किस बंधन को काटने की बात कह रही थी, वो क्या है? जो सुख, संपत्ति, यश, वैभव, सत्ता से महान है, वह क्या है जिसे पाने के लिए श्रेष्ठी कोटिकर्ण ने अपना रास्ता बदल लिया",** मै श्रेष्ठी कोटिकर्ण से वह पाकर रहूँगा, मैं लूटकर रहूँगा, मै विजई बनूंगा और सत्यवादी कोटिकर्ण को ढूंढते हुए सत्संग वाली जगह पर गया परन्तु भिक्षु कोटिकर्ण वहाँ से अन्यत्र के लिए निकल ही रहे थे कि नदी किनारे सत्यवादी को दिख गए वो वहीं से आवाज लगाता है श्रेष्ठी कोटिकर्ण, भिक्षु कोटिकर्ण और पास जाकर कहता है प्रभु वह जो आपके पास है मै उसे ले कर रहूँगा आपके पीछे–पीछे चलूँगा जब तक मैं उसे पा नहीं लेता और उस अँगूठी को नदी में फेंक भिक्षु कोटिकर्ण के साथ चल देता है।"

उपरोक्त कहानी में कोटिकर्ण को अहंकार से मुक्ति, सत्यवादी चोर को अज्ञान से मुक्ति और व्यापारी धनन्जय की पत्नी को मोह से मुक्ति प्राप्त हुई। और वह तीनों अपने–अपने ध्येय की प्राप्ति की राह पर चल पड़े।

निष्कर्षः

जिम्मेदारों को नियमों का पालन लिप्तता, अहंकार, मोह आदि विकारों से मुक्त होकर करना चाहिए, यद्यपि सभी को पद ग्रहण करते समय शपथ लेनी पड़ती हैं [3 & 4] तथापि ये सिर्फ एक औपचारिकता होकर नहीं रहना चाहिए, बल्कि

उसे गंभीरता पूर्वक अपने जीवन में उतारना चाहिए। सभी को अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी भेद–भाव के करना चाहिए जिसमें छोटा, बड़ा, मोह, ममता, अपने, पराये, क्षेत्र, अक्षेत्र का भेदभाव न करते हुए नियमों का सही तरीके से पालन करना और कराना चाहिए। क्योंकि मनुष्य जीवन एक निश्चित समय के लिए मिला है इसके बाद इस शरीर को उन्ही पञ्च तत्वों में विलीन हो जाना हैं जिनसे इनकी सृष्टि हुई है, ये परम सत्य है, इसलिए मनुष्य कर्म, कर्तव्यों को नियमो का आलंबन लेते हुए विवेक पूर्ण निर्णय के द्वारा भली भांति लागू करना और कराना चाहिए जिससे स्वस्थ समाज के द्वारा स्वस्थ, समृद्ध राज्य एवं विकसित राष्ट्र का निर्माण हो सके।

संदर्भः

1. उपनिषद की यह कहानी उपनिषद गंगा जो कि चिन्मय संस्था ने बनाया था तथा इसको दूरदर्शन पर प्रसारित किया जा चुका है यह कहानी एपिसोड नंबर 11 से ली गयी है जिज्ञासु लोग नीचे दी गयी लिंक पर जाकर देख सकते है। https://www-youtube-com/results\ search _query¾kotikarna +upanishad+ganga
2. (https://www-ohchr-org/Documents/Issues/Development/RTDBook/PartIChapter2-pdf½
3. https://dopt-gov-in/sites/default /files/ch&14-pdf
4. https://dopt-gov-in/sites/default /files/CCS_Conduct_Rules_1964_Updated_27Feb15_0-pdf

अशोक कुमार मिश्र
पुस्तकालय सहायक

संस्मरण

विश्वास और अंधविश्वास

कभी–कभी जीवन में ऐसे अनुभव होते हैं जिनको जब तक हम स्वयं अनुभव न करें विश्वास नहीं कर सकते। ऐसा ही अनुभव मेरे साथ हुआ कि "जब जब जो जो होना है तब तब सो सो होई"। दो अनुभव बताना चाहती हूँ।

पहला अनुभवः आज से लगभग 15–16 साल पहले की बात है, उस दिन बहुत तेज बारिश हो रही थी। अक्सर बारिश होने से बिजली भी चली जाती थी। चारों तरफ अँधेरा, तेज हवा चल रही थी। एक गाय हमारी गली के सामने के मैदान में लेटी हुई थी। बीमार थी, आवारा गाय, दरसल आवारा नहीं थी किसी स्वार्थी मनुष्य की होगी जो दूध न देने पर छोड़ दी गयी होगी भटकने या मरने के लिए, बदकिस्मती से वो बीमार हो गयी, माँ उसे रोज रोटी खिलाती थी तो वो सामने के ही मैदान में ज्यादातर बैठी रहती थी। कुछ लोग और भी थे। जो उसे रोटी पानी दे देते थे, हमें सिखाया गया था गाय माँ का ही रूप होती है। आज दो दिन हो गए थे उसे मैदान में पड़े हुए। हमने डॉक्टर को भी बुलाया उसने कहा शायद ही बच पायेगी, रात के 9 बजे होंगे अचानक गाय की स्थिति बिगड़ने लगी। कुछ लोग उसे घेरे खड़े थे। उसको गर्मी देने के लिए आग जलाई, पलान उढ़ाया, दवा खिलाई पर कुछ नहीं हो रहा था मै भी खड़ी देख रही थी। अचानक मुझे लगा कि मुझे गाय को अब गंगाजल–तुलसी देनी चाहिए, पता नही क्यों ये विचार मेरे मन में आया और मै दौड़ कर घर गई, पूजा घर से गंगा जल और तुलसी वाला पानी लेकर आई और गाय के मुंह में डाल दिया। दोनों को कुछ सुकून मिला, मुझे भी और उसे भी ... उसने शरीर छोड़ दिया और मुक्त हो गयी।

दूसरा अनुभवः मैं दिवाली में घर गयी थी। वापसी में बहुत सारा सामान और मिठाई जो माँ और दादी ने प्यार से बाँध दी थी उन्हें साथ लेकर

ट्रेन में चढ़ गयी। मेरी मौसेरी बहन भी साथ हो ली ...दोनों की मंजिल एक जो थी। त्यौहार के कारण रिजर्वेशन नहीं मिला, सो जनरल डिब्बे में लेडीज कोच में बैठे, बहुत भीड़ थी महिलाओं से खचाखच भरी हुई कोच में हमे सीट मिल ही गयी। सफर शुरू हुआ थोड़ी देर बाद एक–एक करके सब अपना कुछ खाने पीने का सामान निकाल कर खाने लगे, इसी बीच एक बूढ़ी अम्मा कोच की फ्लोर पर औंधी लेटी हुई, लम्बी चौड़ी अच्छी कद–काठी की थी पर बुढ़ापे और शायद भूख प्यास ने उसे निढाल कर रखा था। शायद बीमार भी थी नींद खुली तो इशारे से पानी मांग रही थी मैने मेरी बहन की तरफ देखा उसने भी उसकी बोतल की तरफ इशारा किया पर पानी पिलाये कौन ..प्रश्न ये था। कैसा जमाना आ गया है मदद करने के लिए भी सोचना पड़ रहा था हमें, पर फिर कुछ देर बाद उस कोच में एक आदमी .. हाँ भाई एक आदमी भी चढ़ गया था लेडीज कोच में ...ये भारत है बड़ा ही उदार .. नियम में भी, उस आदमी ने अम्मा को पानी पिलाया उसकी बोतल से ..फिर उन्हें थोडा अच्छा महसूस हुआ थोड़ी देर बाद फिर से अम्मा कुछ कहना चाह रही थी ...फिर मैं रुक न सकी मैं अम्मा के पास गई और पूछा आपको कुछ चाहिये, तो उन्होंने अपनी गठरी की तरफ इशारा कर कहा उसमें कुछ खाने को है मैंने गठरी खोली कुछ सूखी रोटी के टुकड़े पड़े थे, मैंने अम्मा से पूछा मेरे खाने में से कुछ खायेंगी ..तो वो मुस्कुरा दी आँखों में पानी भर कर हामी भर दी। मैंने उन्हें पेठा दिया जिससे उन्हें थोड़ी ताकत मिले और सोचा था खाना थोड़ी देर बाद दूंगी, उन्होंने मेरे सर पर हाथ फेरा और खाकर फिर सो गयीं, पर बहुत देर तक उठी नहीं झाँसी से बीना आ गया, अम्मा में कोई हलचल नहीं हुई। कुछ लोगो ने देखा तो पता चला अम्मा शांत हो गयी, मै थोड़ा डर गयी और रुआंसी भी हो गयी।

कुछ महिलायें बातें कर रही थी की तीन दिनों से ऐसे ही पड़ी है इस गाडी में, आज कुछ खाया है और शांत हो गयी। शायद इन्ही दीदी के इंतजार में थी इन्ही के दो निवालों में उसकी जान अटकी थी लगता है .. और मेरे मन में द्वंद चल रहा था की क्या सच में "जब जब जो जो होना है तब तब सो सो होई"

(मनरूप)
रेनु पाठक
पुस्तकालय सहायक

कोरोना काल परिदृश्य

कोरोना काल से पहले जिंदगी सामान्य सी चल रही थी। कोरोना के पैर पसर ही रहे थे। मास्क और सेनेटाइजर की खरीद की मानो होड़ सी लग रही थी। सभी लोग एन 95 मास्क जहां से भी, जैसे भी और जितनी कीमत में भी मिल जाए ले रहे थे। सेनैटाइजर मार्केट में नये–नये थे, छोटा, बड़ा, ब्रान्डेड या नॉन ब्रान्डेड जो भी मिले ले लो। एहतियात ऐंसी की ऑटो को बुक किया सीधे रेलवे स्टेशन को मास्क लगाकर सीधे ट्रेन में और साहब ट्रैन में भी सीट को चार–चार बार सैनेटाइजर करके साफ किया, बेचारे बच्चों को मास्क हटाने नहीं दिया जब तक घर नहीं पहुंच गए। यह दौर वह था जब कोरोना की देश में दस्तक मात्र थी। मध्य प्रदेश में गिने चुने 2 या 4 केस थे। लेकिन नासमझ लोग हल्के में ले रहे थे। हम तो डरे हुए थे ही हमने ऑटो वाले से पूछा भईया कोराना फैला है मास्क नहीं लगाये बोला की चोंचले है। हमें भी लगा कि शायद यहां कम फैला होगा। तब तक कोरोना टेस्ट और क्वारनटाइन शब्द जुबां पर आ चुके थे। अब वक्त था कि हर तरफ कोरोना का हो हल्ला था। सरकार धीरे से सब जगह लॉक डाउन लगा रही

थी। सरकारी, गैर सरकारी, दुकानें, कार्यालय, मार्केट, सिनेमा, क्लब सब बंद होने लगे फिर क्या था बाहर से आने वाले दफ्तर के लोग भी, अपने आने पर आपत्ति जाहिर करने लगे, शुक्र तो ये था कि यह ज़्यादा नहीं करना पड़ा। सरकारी आदेश, लॉक डाउन के समाचार न्यूज़ चैनल पर आने लगे। महिना अप्रैल का था और गर्मी अपने रंग दिखाने लगी थी। हम लोग सोच रहे थे हफ्ता या दो हफ्ता बहुत ही रहा तो महिना इससे ज़्यादा कुछ नहीं। लेकिन महिनों का लॉक डाउन नहीं देखा था। न कोई गाड़ी की आवाज़ न रेल की, न ही आदमी दिखता और न ही कहीं आना जाना बस घर ही रहना था। किराने का सामान जुगाड़ से या नगर निगम की गाड़ी सब्जी और अन्य जरूरत का सामान जुटाना। कुछ भी हो आदमी समझ चुका था कि हमारी जरूरत कितनी है और किसकी है लेकिन हम कितना उपयोग और सदउपयोग करते हैं। मुझे अच्छे से याद है जरूरत एक किलो आलू की थी लेकिन खरीद कर 10 किलो रखें पता नहीं कल मिले न मिले तो सब ने खूब मौके का फायदा भी उठाया चीजों के दाम मन माफिक लिये कोई तय मूल्य नहीं यह समय लॉकडाउन के दूसरे चरण का जिसमें लगभग दो महिनें के लिए सब बंद था।

न्यूज़ चैनल अपने अपने तरीके से कोरोना का बढ़ता हुआ ग्राफ दिखा रहे थे। पहले–पहले पता चलता कि आज एम.पी. में 10 केस निकले, फिर 25 हो गए और फिर भोपाल में भी शुरू हुए, मुझे याद है पहले 5 केस निकले फिर 50 हुए फिर 500 और हजारों में हुए और फिर लाखों में संख्या इतनी बढ़ती गई कि ग्राफ एक साथ चढ़ने लगा। कुछ भी करके संख्या निरंतर बढ़ती जा रही थी। ऐंसे में सरकार जानती थी आदमी ज्यादा दिन अपने घर में बंद नहीं रह सकता उसका मनोबल धीरे धीरे घटता जा रहा था वह हिंसात्मक और आक्रमक हो रहा था। तो फिर एक समय आया कि सरकार का निवेदन ''थाली बजाओ'' पर आया फिर क्या था आदमी और लोगों को कुछ करने का मौका मिला तो पूरे देश की जनता ने थाली बजाकर मेडिकल से जुड़े लोगों का खूब मनोबल बढ़ाया। डाक्टर्स और नर्सेस ने जी जान से अपना दायित्व निभाया और जनता ने उनको भगवान जो माना था, साथ ही साथ शुरू हो चुका था कोरोना चेस्ट, मेडिकल सुविधाएं बढ़ाने का कोरोना हॉस्पिटल में कोरोना के इलाज का और कोरोना के नाम पर लाखों रूपये ऐंठने का, फिर क्या था कोई पांच लाख में तो कोई 85 हजार में इलाज कर रहा था। और ईलाज के नाम पर विटामिन्स और एन्टीबाइटिक मेडीसिन का यही इलाज दिया जा रहा था। एक समय ऐंसा भी था जब मृत्यु दर बहुत अधिक थी। लाशों का अंतिम संस्कार भी लावारिस की तरह हो रहा था, बहुत सी लाशों के तो परिवार वाले ही नहीं आते थे। अस्पतालों से ट्रक भर–भर लाशें निकाली जा रही थीं। हर तरफ यही उम्मीद लगाई जा रही थी कि (कोरोना वैक्सीन) कब आयेगी। लेकिन वैक्सीन अभी काफी दूर थी। सभी देशों में प्रतिस्पर्धा जोरों पर थी। यह समय था जून जुलाई का और मोदी जी कभी थाली बजाकर तो कभी ताली बजाकर और कभी मोमबत्ती जलाकर सन्तावना दे रहे थे। देशवासी भी खूब साथ दे रहे थे।

देश की आर्थिक स्थिति भी लेजी से गिर रही थी। गिरती भी क्यों न सब कुछ जो बन्द था। उद्योग, धन्धो, किसानी, बाजार, रेल, स्कूल, सिनेमाघर सब कुछ। सरकारी दफ्तरों में भी कामकाज ढप था। बस चल रहे थे तो जरूरी सामान जैसे दूध, सब्जीवाला, किराने वाला, बस वो भी काफी दिक्कतों के बाद सड़क पर निकल पा रहे थे। पुलिस जिसे भी देखती उस पर डण्डे बरसाती सरकार समझ चुकी थी। कि अब लॉक डाउन ज्यॉदा नहीं बढ़ा सकते क्योंकि गरीब मज़दूर वर्ग जो फंस चुका था जहां वो था। बैठकर आखिर कब तक खा सकता था। अब धीरे–धीरे पास में पैसा भी खत्म हो गया था। तभी सरकार ने सोचा गरीब मजदूरों को उनके

घर जाने की अनुमति दी जाए। जैसे ही यह खबर फैली, मजदूर वर्ग पैदल ही सड़कों पर निकल लिया, अपने घर के लिए बच्चे, महिलाएं, पुरूष न जाने कितने किमी पैदल चल रहे थे। जिसके पास जैसे बन पड़ा वो निकल पड़ा ठेले पर, साइकिल पर, ऐंसा लग रहा था जैसे सड़क पर सैलाब आ गया हो। बेचारों के पास न खाना था और न पैर में चप्पल। हॉ ये जरूर था कि बहुत से लोगों ने, सामाजिक संस्थाओं ने छोटे–छोटे ग्रुपों ने खाना खिलाया, पुराने कपड़े दिये जूते चप्पल दिये और कुछ नहीं तो गुड़ चना तक भी दिये। किसी भी तरह घर पहुंच जाये। यह स्थिति सरकारों एवं राज्य सरकरों को भी दिखी। कोशिश करी बस चलाने की जिससे कुछ राहत मिल पायें और राहत मिली भी। कुछ राज्यों ने तो अपने–अपने राज्य के लोगों को वापस लाने के लिए महत्वपूर्ण ट्रेने और निजी सेवाओं के वायुयान तक का सहारा लिया।

कुछ समय बीता, जीवन रूपी गाड़ी फिर चलना शुरू हुई लोगों ने हिम्मत दिखायी और सुरक्षा के साथ घर से निकले, काम करना शुरू किया और परिवार का भरण, पोषण, पालन शुरू किया। किन्तु न जाने कितने लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये। कोई हिसाब नहीं था। लेकिन वो लोग जो काल के मुंह से वापस आये वे भगवान को, सम्बन्धियों को, दोस्तों को एवं परिवार को सबका धन्यवाद करते थक नहीं रहे थे। दूसरी तरफ मेडीकल विभाग जोरदार तरीके से जल्द से जल्द वैक्सीन बनाने की ओर अग्रसर थे। लगभग वैक्सीन बाचार में आ चुकी थी। किंतु अभी लगने की शुरूआत नहीं हो पायी थी। आदमी के अन्दर डर भी बहुत था। अभी वैक्सीनेशन ट्रायल मोड पर था। फिर समय बीतता गया। नये आंकड़े मिलते गये देश में वैक्सीनेशन का काम युद्ध स्तर पर चल रहा था। स्थिति दर्शा रही थी। कि एक दिन में करोड़ो लोगों को वैक्सीन लग रही थी। समय काफी कठिन था और अपनों को खोने का अहसास मात्र से आदमी सिहर उठता है। कोरोना ने न केवल आर्थिक बल्कि मानसिक एवं शारीरिक रूप से भी कमजोर बनाया है। ये हम सभी जानते हैं कि यह बीमारी लम्बी चलेगी और हम सभी को इसी सत्य के साथ जीवन यापन करना है–

''काल का प्रति रूप है, अनन्त में भी न रूप है।
ब्रह्माण्ड में है सत्य यही, जीवन का शत्रु यही।
दो फीट की दूरी है जीवन जीना जरूरी है।
सेनेटाइजर का साथ है डरने की क्या बात है।''

ये लाइने उन लोगों के लिये उदाहरण है जिन्होंने असावधानी बरती या बरत रहे हैं। अभी भी वक्त है जीवन के साथ आँख मिचौली न खेलें क्यों कि

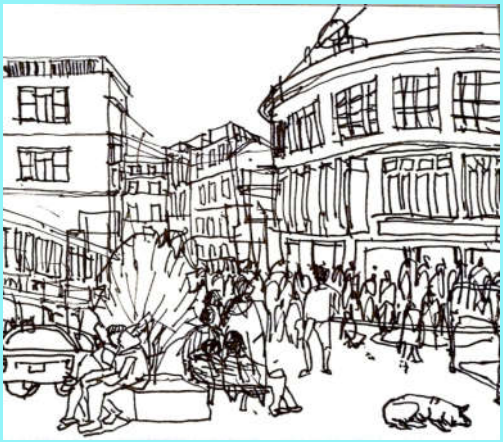

रेखाचित्रः डॉ आनंद वाडवेकर
सह प्राध्यापक

आप की कमी कोई और पूरी नहीं कर सकता।

रचना कुमारी, पत्नी श्री जितेन्द्र कुमार
तकनीकि सहायक, जी.आई.एस.

मीडिया कवरेज

एसपीए की ऑनलाइन एनुअल एग्जीबिशन 'प्रयाण' में दिखे 17 स्टूडेंट्स के क्रिएटिव वर्क

स्टूडेंट्स के लॉकडाउन से जुड़े इनोवेशन, ताकि वर्क फ्रॉम होम हो आसान और हेल्दी

न्यू अप्रोच न्यू डिजाइन

गो-कार्ट का एक्सपीरियंस देने वाली व्हील चेयर

हाइड्रो-को अलार्म से याद दिलाता है पानी पीना

सिटिंग, स्टैंडिंग और मैट्रेस मोड वाला फ्लेक्सिबल वर्क स्टेशन

टेबल पर हर्ब्स उगाने वाला हाइड्रो ब्लॉक

कोविड ईयर को प्रोडक्टिव बनाने... तैयार किए प्रिंट प्रोजेक्ट्स, सभी में नजर आती है यूनिक कहानी

एसपीए स्टूडेंट्स ने मध्यप्रदेश के ट्राइबल गेम्स, भोपाल के ऑथेंटिक फूड को किया डॉक्यूमेंट

मोटर स्किल्स, फिजिकल एक्टस से भरपूर हैं ट्राइबल गेम्स

अफगानी कुजीन से बना भोपाली जायका

400 साल पुरानी पेंटिंग के लिए बनाए प्रमोशंस

स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर में दीक्षांत समारोह

लोकल कल्चर और मटेरियल का यूज कर सिटी में ला सकते हैं यूनिकनेस

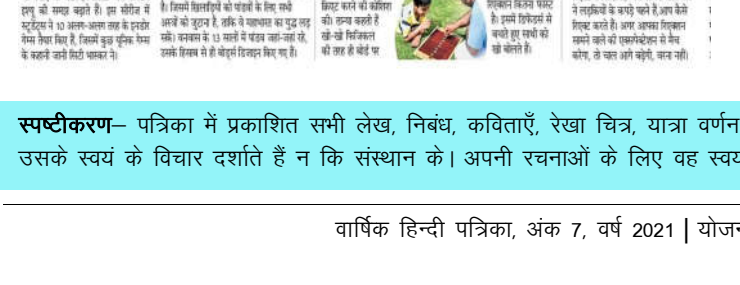

तनुष्का गुप्ता को मिला पहला गिरिराज किशोरी मेमोरियल अवार्ड

टारगेट स्टडी पर फोकस

बदलते कैंपस

शहर में बन रही सेंट्रल इंडिया की पहली जीआईएस प्रयोगशाला

एसपीए में बनीं 5 लैब और 2 ऑडिटोरियम

ग्रीन बिल्डिंग कॉन्सेप्ट पर

भास्कर खास • दिमागी कसरत के लिए चार लेवल बनाए टिक-टैक-टो और फिटगो हौंजी, 30 सेकेंड्स में करना होता है परफार्म

बच्चों को फिजिकली एक्टिव रखने के लिए एसपीए स्टूडेंट्स ने डिजाइन किए जेंडर सेंसिटिविटी, महाभारत और खो-खो से इंस्पायर्ड इंडोर गेम्स

पूरी सीरीज में दस अलग-अलग तरह के इंडोर गेम्स...

कोरोनाकाल में बढ़ा क्रेज...स्क्रीन टाइम कम करने के लिए पैरेंट्स भी खेल रहे बच्चों के साथ इंडोर गेम्स

कुरुक्षेत्र में जुटाने हैं हथियार

खो-खो इंस्पायर्ड बोर्ड गेम

शिक्षण पर मिलेगी जीत

सेमिनार

पैंडेमिक ने बदली शहरों की तस्वीर, अब ज्यादा सस्टेनेबल हो गए हैं घर

सिटी रिपोर्टर। स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) में 10वें आईएसबीएस सेमिनार का आयोजन कोविड-19 के बाद मानव बस्तियों में बदलाव विषय पर हुआ। तीन दिवसीय सेमिनार में प्रो. संजीव सिंह ने कहा, महामारी ने घर में रहने के तरीकों को बदल दिया है। इस समय में कई लोगों के घर आफिस में तब्दील हो गए थे साथ ही कई लोगों ने रोजगार की चीजों के मामले में अपने घर को एक सस्टेनेबल होम बनाने की कोशिश भी की, ताकि ताजी सब्जियां, फलों के लिए बाहर न निकलना पड़े। पैंडेमिक से डर कर लोगों ने अपने बिहेवियर को चेंज करना शुरू किया, जिसका सीधा असर पर्यावरण पर देखने को मिला। अब इन्हीं बदलावों को आगे भी बनाए रखने की आवश्यकता है। सेमिनार में महेश्वर शहर, नलसरोवर, तटीय सौराष्ट्र, गुजरात के पाटन, मुंबई मझीवाड़ा गौथान, पुणे, बैगा जनजाति की बस्तियों पर 37 रिसर्च पेपर प्रजेंट किए गए।

स्पष्टीकरण– पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, निबंध, कविताएँ, रेखा चित्र, यात्रा वर्णन, संस्मरण इत्यादि रचनाकार द्वारा रचित उसके स्वयं के विचार दर्शाते हैं न कि संस्थान के। अपनी रचनाओं के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

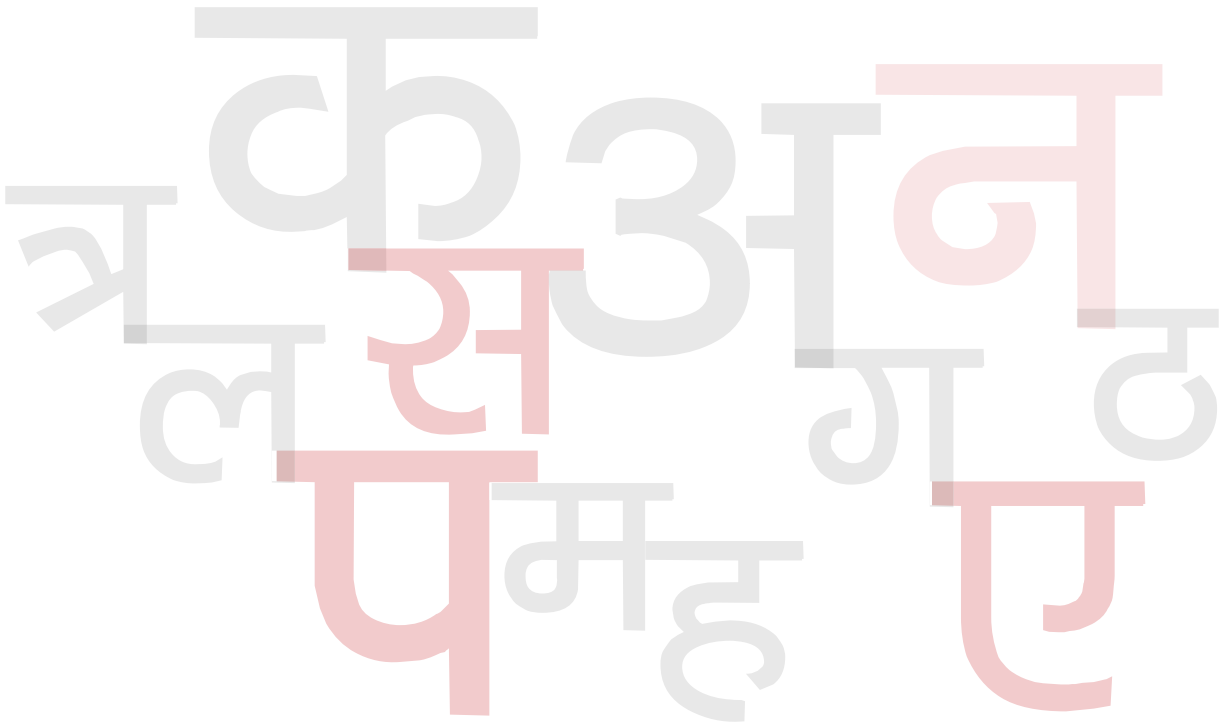

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत के झीलों के शहर में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में मालवा वास्तुकला का अर्थ समाहित है, जो कि मालवा सल्तनत की राजधानी मांडू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने 'महादेव' के प्रतीक एक शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु इसमें अर्पित करते हैं। जलवाहिका में प्रवाहित जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है। जो कि वास्तुकला का अभिन्न अंग एवं **School of Planning and architecture,** स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह में शंखाकार रूप में दर्शित **'S'** अग्नि **'P'** वायु तरंग एवं **'A'** पानी की बूंद प्रदर्शित करती है प्रतीक चिन्ह के नीचे संस्कृत में लिखा श्लोक 'रथपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रः' श्समरांन्गना सूत्रधार से उद्धृत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिए, प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ–साथ सर्व विषयों में पारंगत कर भविष्य में एक नये आयाम के लिए तैयार करना है।

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
नीलबड़ रोड, भौरी, भोपाल (म.प्र.) – 462 030 (भारत)

Website: www.spabhopal.ac.in